दृष्टि The Vision

Mentorship Program
Mukherjee Nagar

हिन्दी साहित्य
(Hindi Literature)

टेस्ट-11
(प्रथम प्रश्न-पत्र)

DTVF
OPT-23 **HL-2311**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक : 250 *Maximum Marks : 250*

नाम (Name): Puran (पुरन)

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ [✓] नहीं [ ]

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 11 , 23 Aug 2023

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

0	8	3	9	0	4	8

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) यूनीकोड और हिन्दी

हिन्दी के तकनीकी उपयोग व कम्प्यूटर की भाषा के संबंध में प्रायः सवाल उठाये जाते रहे। इस क्रम में 'यूनीकोड' का आविष्कार एक क्रांतिकारी घटना थी, जिसने 'हिन्दी' के तकनीकी भाषा के रूप में प्रयोग को सहज और सरल बना दिया।

वस्तुतः 'यूनीकोड', एक कंप्यूटर प्रोग्राम है, जिसमें 160 विश्व का कोड था, जिसकी वजह से इसमें 65000 से अधिक संयोजन संभव थे। इस कारण से यह विश्व की किसी भी भाषा के शब्दों का हिंदी अनुवाद करने में सक्षम था।

इस रूप में तकनीकी उपयोग की दृष्टि

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

से हिन्दी के समक्ष आने वाली मुख्य परेशानी को यूनीकोड ने काफी हद तक दूर कर दिया था।

इस रूप में सॉफ्टवेयर एप्लीकेशन के क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग आसान हो गया, हालांकि ऑपरेटिंग सिस्टम के क्षेत्र में अभी भी यूनीकोड व प्रभाव नाकाफी था।

वहीं हिंदी टाईपिंग से संबंधित समस्या को 'इनस्क्रिप्ट' ने आगे चलकर दूर किया।

इस रूप में हिन्दी को 'तकनीक' व कंप्यूटर की भाषा के रूप में स्थापित करने में 'यूनीकोड' ने महती भूमिका निभाई।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

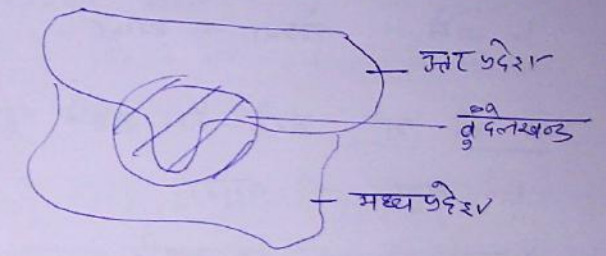

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ख) 'बुंदेली' बोली

बुंदेली प्रमुखतः बुंदेलखंड क्षेत्र में बोली जाने वाली बोली है। इसके अंतर्गत मध्य प्रदेश के तथा उत्तरप्रदेश के क्षेत्र आते हैं।

इसके अंतर्गत गया, झांसी सहित महाराष्ट्र के नागपुर क्षेत्र का कुछ हिस्सा भी आता है।

बुंदेली चूंकि 'पश्चिमी हिन्दी' उपवर्ग की भाषा है, इसलिये इस पर कुछ प्रभाव खड़ी बोली और ब्रज भाषा का भी नजर आता है।

भाषिक विशेषताएँ :-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

- बुँदेली 'ए वर्ग' बहुला भाषा है
- 'ओकारांतता' इसकी मुख्य प्रवृत्ति
  ↳ जैसे - चलौ, गयो
- अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति —
  ↳ जैसे → धोखा → धोका
- 'ब' को 'म' करने की प्रवृत्ति
  ↳ बबूल → बमूरा
- 'अनुनासिकीकरण' की प्रवृत्ति
  ↳ दाँत, पैना
- 'श'/'ष' को 'स' करने की प्रवृत्ति
  शरीर → सरीर
- इसमें बीच में 'ह' का लोप करने की प्रवृत्ति
  चाहत → चाउत
- सहायक क्रियायें — औं, आव, आय का प्रयोग।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु हिंदी साहित्य सम्मेलन के सुझाव

'हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग' की शुरुआत 1935 में काशी नागरी प्रचारिणी सभा के तत्वाधान में हुई। आगे चलकर हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि के विकास में इस सम्मेलन का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु सम्मेलन ने महत्वपूर्ण सुझाव दिये, जिनमें प्रमुख सुझाव इस प्रकार हैं—

(i) हिन्दी में प्रचलित एवं लोकमान्यता पा चुके अन्य भाषा के शब्दों को ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया जाये।

(ii) देवनागरी लिपि में अप्रचलित हो चुके संकेतों का प्रयोग छोड़ दिया जाये, जैसे → ऌ, ॠ आदि।

(iii) 'अ' की बारहखड़ी का प्रयोग किया जाये (सावरकर बारहखड़ी)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(iv) मात्रा-व्यवस्था के संबंध में वैज्ञानिक पद्धति का पालन किया जाये। 'र' को छोड़कर अन्य मात्रायें मूल अक्षर के पश्चात दाँयी ओर लगाई जायें।

(v) 'शिरोरेखा' का प्रयोग लेखन में छोड़ दिया जाये, किंतु मुद्रण में जारी रहे।

(vi) 'द्य' को 'द्य' तथा 'म्ब' 'न्ब' के रूप में ही लिखा जाये।

(vii) 'पंचमाक्षरों' (ङ, ञ, ण, न आदि) के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग ही किया जाये।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में थियोसोफिकल सोसाइटी का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना मैडम ब्लावत्की तथा ओ. एच. ओलकुट ने अमेरिका के सेन फ्रांसिस्को में की थी।

इस सोसायटी ने प्राचीन भारतीय परंपरा तथा ग्रंथों के अध्ययन में रुचि दिखायी। इस हेतु इन्होंने चेन्नई के निकट 'अडयार' में अपना मुख्यालय भी खोला।

स्थानीय ग्रंथों के एवं साहित्य के अध्ययन में सोसायटी ने पाया कि हिन्दी ही अधिकतर भारतवासियों की भाषा के निकट थी। इसीलिये उन्होंने भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य - ग्रंथों का विभिन्न भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद करवाने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

सोसायटी की तरफ से हिन्दी प्रचार कार्य को तब और मजबूती मिली

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तब एनी बिसेंट ने सोसायटी की अध्यक्षता संभाली।

'होमरूल मूवमेंट' के दौरान लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक तथा एनी बिसेंट दोनों ने ही 'हिन्दी' के महत्व को स्वीकारा तथा 'होमरूल लीग' के माध्यम से देश भर में 'लिंक-भाषा' के रूप में हिंदी का प्रयोग किया।

इस रूप में स्पष्ट है कि राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास तथा प्रचार-प्रसार में थियोसोफिकल सोसायटी ने अग्रणीय होकर महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि के विकास में शिवप्रसाद 'सितारे-हिन्द' का योगदान।

भारतेंदु युग से पूर्व हिन्दी के विकास में राजा शिवप्रसाद 'सितारे-हिन्द' का अप्रतिम योगदान रहा।

इस समय हिंदी की जो दो प्रमुख शैलियां विकसित हुई थी, उनमें से एक राजा शिवप्रसाद की ही 'उर्दू-प्रधान' शैली थी।

1845 ई. में इन्होंने 'बनारस' नामक अखबार निकाला, जिसमें इन्होंने इसी उर्दू-प्रधान शैली का प्रयोग किया।

इसके अतिरिक्त इनकी मुख्य रचनाएं 'मानव धर्मसार', 'इतिहास तिमिरनाशक', व 'भूगोल हस्तामलक' इत्यादि थी।

हालांकि सारंश में इनकी भाषा सरल बोलचाल की ही थी, किंतु 1960 के बाद शिक्षा अधिकारी बनने के पश्चात इनकी भाषा में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पुसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बलिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उर्दूपन बढ़ता गया। यही कारण है कि 'इतिहास तिमिरनाशक' में फारसी शब्दों की भरमार थी।

इनका हिन्दी या हिन्दुस्तानी को विशिष्ट योगदान फारसी की 5 ध्वनियों के नीचे नुक्ता लगवाना (क़, ख़, ग़, फ़, ज़) थी।

राजा शिवप्रसाद की शैली का अनुकरण आगे चलकर प्रेमचंद, यशपाल आदि ने किया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) हिंदी साहित्य के विकास में अपभ्रंश के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी में अनूदित लेखन पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'दक्खिनी हिंदी' के प्रयोग-क्षेत्र बतलाते हुए 'दक्खिनी हिंदी' की भाषागत विशेषताओं का उद्घाटन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बलिंगटन आकेंड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु किए गए सरकारी प्रयासों पर प्रकाश डालिए। 20

स्वतंत्रता-संघर्ष के दौरान 'हिन्दी' को राष्ट्रभाषा बनाने का जो आंदोलन चल पड़ा था, वह स्वतंत्रता के पश्चात भी जारी रहा।

संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी भाषा के महत्व को देखते हुये ही संविधान सभा के सदस्यों ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में संविधान में समाहित किया।

इसी क्रम में संविधान के 'भाग-17' में 'राजभाषा' शीर्षक से अध्याय को जोड़ा गया और अंग्रेजी व हिंदी दोनों को राजभाषा बनाया गया है।

इस भाग के अंतर्गत अनु० 343 से 351 तक 'राजभाषा' के प्रयोग को लेकर विस्तृत प्रावधान किये गये हैं।

यह भी प्रावधान किये गये कि 15 वर्ष पश्चात अर्थात 26 जनवरी 1965 के पश्चात अंग्रेजी का प्रयोग बंद

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बलिंगटन आकेंड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कर दिया जायेगा तथा हिंदी एकमात्र राजभाषा बनी रहेगी। वहीं प्रत्येक 5 वर्ष पश्चात 'राजभाषा हिन्दी' के समीक्षा हेतु 'राजभाषा आयोग' का भी गठन किया गया।

हालाँकि दक्षिणी भारत के अहिंदीभाषी राज्यों के विरोध के कारण अंग्रेजी के प्रयोग को 15 वर्ष के पश्चात भी जारी रखने का प्रावधान किया गया।

इस संबंध में 'राजभाषा अधिनियम 1963' लाया गया।

इसके कारण 'राष्ट्रभाषा' के रूप में हिन्दी के प्रचार-प्रसार को आघात लगा।

हालाँकि सरकारी स्तर पर गृहमंत्रालय के अधीन 'राजभाषा विभाग' का गठन कर यह निर्देशित किया गया कि राष्ट्रभाषा व राजभाषा के रूप में हिंदी का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाये।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वहीं सरकारी विभागों में भी प्रयास से 'राजभाषा विभाग' बनाये गये।

सरकारी कार्यों के लिये हिन्दी प्रशिक्षण को अनिवार्य किया गया।

साथ ही 1960 में 'केंद्रीय हिंदी निदेशालय' की स्थापना कर हिन्दी प्रशिक्षण हेतु प्रवीण, प्रबोध एवं 'प्राज्ञ' नामक प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चलाये गये।

वहीं राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के विकास हेतु 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' के अंतर्गत 1986 में 'त्रिभाषा सूत्र' का प्रावधान किया गया, जिसके अंतर्गत दक्षिणी राज्यों में मातृभाषा तथा अंग्रेजी के साथ हिन्दी विषय के अध्ययन का प्रावधान किया गया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

वहीं 'इप्टा' जैसी संस्थाओं ने नाट्य मंचन के माध्यम से भी हिंदी भाषा को जनजन तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

इस राज्य में 'हिन्दी' के राजभाषा के रूप में प्रचार-प्रसार हेतु हालांकि काफी प्रयास किये गये, किंतु तब भी अपेक्षित परिणाम अभी तक हासिल नहीं हो पाये।
जिसके पीछे प्रमुख कारण "1968 का राष्ट्रपति का आदेश', राजभाषा आयोग का नियमित गठन न होना, सरकारी विभागों में ~~[illegible]~~ हिंदी विभाग के नाम पर खानापूर्ति करना तथा वैश्विक व तकनीकी भाषा के रूप में अंग्रेजी भाषा से मिल रही कड़ी चुनौती इत्यादि रहे हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ख) बिहारी हिंदी की बोलियों का परिचय दीजिए। 15

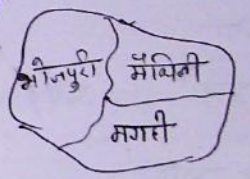

'बिहारी हिन्दी' वस्तुतः बिहार राज्य में विभिन्न क्षेत्रों में बोली जाने वाली भाषा है, जिसके अन्तर्गत मुख्य रूप से भोजपुरी, मैथिली ~~[illegible]~~, तथा मगही तीन बोलियां शामिल की जाती हैं।

(क) ~~भोजपुरी~~

बिहार राज्य

(i) भोजपुरी :-

भोजपुरी बोली बिहारी हिंदी के साथ ही हिंदी की भी सर्वाधिक लोकप्रिय बोलियों में से एक है।
भारत के साथ ही विश्व भर में इसके 4 करोड़ से अधिक प्रयोक्ता हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

बिहार के छपरा इत्यादि क्षेत्रों के लिए यह उत्तर प्रदेश के गोरखपुर आदि क्षेत्रों में व्यापक तौर पर बोली जाती है।

'भोजपुरी सिनेमा' के कारण भी इस बोली को व्यापक पहचान मिली है।

प्रमुख विशेषतायें :-

- 'ऐ' तथा 'औ' का 'अइ' तथा 'अउ' (क्रमशः) के रूप में प्रयोग
  - ऐसा → 'अइसा', औरत → 'अउरत'
- 'ड़' का 'र' में प्रयोग
  - ↳ लड़ाई → लराई, झगड़ा → 'झगरा'
- क्रिया रूप → वर्तमान में 'त' रूप → 'चलत'
  भूतकाल में 'ल' रूप → 'चलल'
  भविष्यकाल में 'ब' रूप → 'चलिबे'

(ii) मैथिली :

मैथिली साहित्यिक स्तर पर एक समृद्ध बोली है, जो बिहार के नेपाल सीमा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

से पूर्वी क्षेत्रों भागलपुर, पूर्णिया, समस्तीपुर आदि में बोली जाती है।

'विद्यापति' जैसे महान कवि ने 'मैथिली' में ही रचनायें की।

भाषा में 'पूर्वीपन' के कारण 'न' को 'ने' (बान), 'ड़' को 'र' करने की प्रवृत्ति इस बोली की प्रमुख प्रवृत्ति है। वहीं इसमें क्रियाओं में कोई लिंग भेद नहीं होता है।

मगही :

यह प्राचीन मगध क्षेत्र में बोली जाने वाली बोली है।

इसके अंतर्गत पटना, हजारीबाग इत्यादि बिहार तथा झारखंड के प्रमुख क्षेत्र आते हैं। यह भाषा कई मायनों में भोजपुरी के ही समान है। इसमें सर्वनाम में 'आप' का प्रयोग इसकी विशेषता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) श्री कामताप्रसाद गुरु के हिंदी व्याकरण-लेखन की विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

श्री कामताप्रसाद गुरु ने तत्कालीन समय में हिंदी भाषा के मानकीकरण के कार्य को संपन्न करने के लिये हिंदी के मानक व्याकरण की रचना का बीड़ा अपने कंधों पर उठाया।

उनसे पूर्व हालाँकि मिश्रबंधु, गार्सां द तासी आदि भी व्याकरण लिखने का प्रयास कर चुके थे, किंतु प्रथम परिपक्व व मानक प्रयास कामताप्रसाद गुरु द्वारा ही किया गया।

यही कारण है कि उन्हें 'हिंदी के पाणिनी' के नाम से भी जाना जाता है।

अपने ग्रंथ 'हिन्दी व्याकरण' में इन्होंने शब्द-चर्चा में शब्दों के

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संस्कृत के निरुक्त को इन्होंने मुख्य आधार बनाया।

वहीं अन्य भाषा के शब्दों के संबंध में इन्होंने 'आदमकृत हिन्दी ग्रामर' तथा दामले रचित 'मराठी व्याकरण' का सहारा भी लिया।

स्पष्ट है कि उन्होंने व्याकरण लेखन के संबंध में किसी प्रकार का भाषायी पूर्वाग्रह नहीं रखा।

वहीं हिंदी भाषा के विशुद्ध व्याकरण रचना के लिये इन्होंने ब्रजभाषा तथा अवधी के साथ ही अन्य स्थानीय भाषा के प्रचलित शब्दों व ग्रंथों का अध्ययन भी किया।

इस रूप में उन्होंने अपने स्तर पर 'हिन्दी व्याकरण' ने

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

संबंधित लगभग सभी संदेहों को दूर कर एक मानक परिष्कृत व्याकरण रचना का प्रभावी व भागीरथी कार्य किया।

इनके पश्चात जो कुछ कमी बाकी रह गयी थी, उसे श्री किशोरीदास वाजपेयी द्वारा 1950 के दशक में दूर करने का प्रयास किया गया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'राजभाषा हिंदी' की वर्तमान स्थिति में सुधार हेतु सुझाव दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) उन्नीसवीं सदी में खड़ी बोली हिंदी के विकास में सामाजिक सुधार आन्दोलनों की भूमिका पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) दक्खिनी हिंदी के विकास में आदिलशाही वंश के शासकों के योगदान का निरूपण कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) संतकाव्यधारा और सूफीकाव्यधारा में अंतर

संतकाव्यधारा, वस्तुतः ~~हिन्दी~~ की भक्ति आंदोलन के दौरान ~~[illegible]~~ संतों द्वारा रचित काव्य धारा थी, जिनके अंतर्गत संतों ने ईश्वर (सगुण व निर्गुण) के प्रति अपनी भक्ति-भावना का प्रदर्शन किया।

वहीं सूफी काव्यधारा, इसी दौरान इस्लामी एकेश्वरवाद से प्रभावित सूफी कवियों की रचनाओं की धारा है, जहाँ इन कवियों ने खुदा व बंदे में 'प्रेम' के संबंध को केन्द्र बनाया।

प्रमुख अंतर :

संत काव्यधारा	सूफी काव्यधारा
• भारतीय प्रभाव	• विदेशी प्रभाव (इस्लाम)
• 'ईश्वर' को प्रेमी/पति के रूप में मान्यता	• 'ईश्वर' को 'प्रेमिका' का दर्जा
उदा. - मीरा द्वारा	उदा. - कुतुबन की 'मृगावती'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संत काव्यधारा	सूफी काव्यधारा
• गुरु की महिमा, केवल इंसानी रूप में। उदा॰ कबीर के गुरु 'रामानंद'	• इनमें भी गुरु की महिमा, हालांकि गुरु पशु/पक्षी या प्रतीक भी संभव। उदा॰ → 'पद्मावत' में गुरु के रूप में 'हीरामन' तोता
• सगुण ईश्वर व निर्गुण ईश्वर दोनों की ही भक्ति	• केवल निराकार ईश्वर के प्रति समर्पण
• प्रमुख कवि – कबीर, रैदास, मीरा, मलूकदास आदि	• प्रमुख कवि – जायसी, कुतुबन, मुल्ला दाऊद आदि।

हालांकि इन अंतरों के बावजूद 'संत काव्यधारा' व 'सूफी काव्यधारा' के मूल में 'ईश्वर के प्रति प्रेम' तथा आमजन में 'समन्वय-भावना' जैसे तत्व समान थे।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नाटककार रामकुमार वर्मा

हिन्दी की आधुनिक नाट्य-धारा में नाटककार रामकुमार वर्मा ऐतिहासिक नाटककार के रूप में विख्यात हैं।

हालांकि जयशंकर प्रसाद के ऐतिहासिक नाट्य शैली से प्रेरणा लेते हुये भी रामकुमार वर्मा ने ऐतिहासिक संदर्भों में मौलिक नाटकों की रचना की।

उनके प्रसिद्ध नाटकों में 'अशोक का शोक', 'पृथ्वीराज की आँखें', 'रेशमी टाई' इत्यादि प्रमुख हैं।

'अशोक का शोक' नाटक में उन्होंने कलिंग-युद्ध के पश्चात शोक एवं विषाद से ग्रस्त 'अशोक' की मनःस्थिति का नाटक के माध्यम से चित्रण किया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

वहीं ऐतिहासिक नाटककार के साथ ही रामकुमार वर्मा की प्रसिद्धि का एक अन्य कारण उनके द्वारा रचित 'एकांकियाँ' भी है, जिसके कारण उन्हें 'एकांकी-सम्राट' भी कहा जाता है।

उनके द्वारा रचित एकांकियों में 'ऐतिहासिक' के साथ ही 'सामाजिक एकांकियाँ' भी प्रमुख है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अज्ञेय की काव्यानुभूति

हिन्दी की 'नई कविता' धारा के प्रमुख कवियों में सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का नाम अग्रगण्य है।

'अज्ञेय' चूंकि 'नई कविता' के दौर के कवि है, इसलिए उनकी कविता में नये दौर की विशिष्ट काव्यानुभूति दिखायी पड़ती है।

पूर्व में चली आ रही प्रगतिवादी, मनोविश्लेषवादी इत्यादि काव्यधाराएँ, कविता को 'वैचारिक यांत्रिकता' में जकड़ रही थी। वे या तो व्यक्ति को या समाज को अधिक महत्व दे रही थी।

अज्ञेय ने अपनी कविताओं में इस 'वैचारिक यांत्रिकता' को तोड़ने का प्रयास किया। अज्ञेय के अनुसार कविता का उद्देश्य व्यक्ति की आंतरिक

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भावनाओं का उत्फुरन होना चाहिये। इसकी किसी विचारधारा के प्रति प्रतिबद्धता नहीं होनी चाहिये। हालांकि टी॰ एस॰ इलियट के 'निर्वैयक्तिकता सिद्धांत' के अनुरूप यह केवल 'भावनाओं का शमन' नहीं होनी चाहिये।

वस्तुतः अज्ञेय मानते थे कि समाज में 'व्यक्ति' के व्यक्तित्व और समाज दोनों का ही महत्व है। अपनी कविता 'नदी के द्वीप' में अज्ञेय कहते भी हैं-

"हम नदी के द्वीप ×××
किंतु हम बहेंगे नहीं, क्योंकि बहना रेत होना है ×××
हम बहेंगे तो रहेंगे ही नहीं"

वहीं 'असाध्य वीणा' में इन पर जेन बुद्धिज्म का प्रभाव स्पष्ट नजर आता है जहाँ वे 'व्यक्तित्व के विलयन' की बात कहते हैं-

"डूब गया था मैं तो स्वयं शून्य में"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) प्रकृतवादी हिन्दी उपन्यास

हिन्दी की प्रकृतवादी उपन्यासधारा छायावादोत्तर आधुनिक दौर की एक धारा है, जो उपन्यास में चरम यथार्थवाद के प्रक्षेपण को उद्देश्य बनाती है।

इस धारा के उपन्यासकार मानते हैं कि उपन्यास में किसी भी प्रकार के आदर्शवाद या लेखकीय हस्तक्षेप को स्वीकार नहीं किया जाना चाहिये। साहित्य का उद्देश्य केवल समाज में परिवर्तन ही नहीं बल्कि समाज का यथार्थपरक चित्रण प्रस्तुत करना भी है।

इसलिये उपन्यास-कथा में चरम एवं नग्न यथार्थ को बिना किसी लाग-लपेट के लिखना चाहिये।

वस्तुतः पाँचरागत प्रतिमानों के खंडन की यह प्रवृत्ति हिन्दी काव्यधारा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की 'अकविता' धारा के समान दिखाई पड़ती है जहां 'विजय' के रूप में तीन कवियों ने काव्य में यथार्थवाद के चित्रण की घोषणा की थी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) अष्टछाप

'अष्टछाप', वस्तुतः हिन्दी की कृष्णभक्ति धारा के 'आठ कवियों' का समूह है, जिसकी स्थापना वल्लभदास के पुत्र विट्ठलनाथ द्वारा की गयी थी।

वस्तुतः इसमें वल्लभदास के चार शिष्यों तथा विट्ठलनाथ के चार शिष्यों को शामिल किया गया था जो बारी - बारी से दिन के आठों पहर में कृष्ण भक्ति के पद गाया करते थे।

अष्ट छाप के प्रमुख कवि थे - सूरदास, उनके अतिरिक्त अन्य प्रमुख कवि थे - कुंभनदास, नंददास, कृष्णदास इत्यादि।

वस्तुतः ये सभी 'पुष्टिमार्ग' के कवि थे, जो 'पोषणं तत् अनुग्रहं' के सिद्धांत में विश्वास रखते थे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इनके अनुसार संसार के सभी जीवों का पोषण ईश्वर अर्पात कृष्ण की इच्छा से ही होता है।

इन कवियों ने अपनी कविताओं की रचना ब्रजभाषा में कर ब्रजभाषा को काव्य भाषा के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इन कवियों ने अपनी रचनाओं 'राधा-कृष्ण' की कथा के माध्यम से श्रृंगार के दोनों पक्षों यथा - संयोग व वियोग पर लेखनी चलाई।
सूरदास का एक ऐसा ही उदाहरण द्रष्टव्य है -

"निरखत अंक श्याम सुंदर के, बार-बार लावति छाती
लोचन जल कागद मसि मिलिकै, ह्वै गयी श्याम श्याम की पाती"

नंददास की वाणी को तो मोती के समान बताया जाता था -
"और कवि गढ़िया, नंददास जड़िया"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'नई कहानी' की शिल्पगत विशेषताओं का उद्घाटन कीजिए। 20

'नई कहानी', मूलतः अंग्रेजी साहित्य की 'न्यू स्टोरी मूवमेंट' से प्रभावित कहानी-आंदोलन था।
1950 के दशक में स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय समाज की स्थिति काफी बदल चुकी थी।
स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात जो सुनहरे स्वप्न देखे गये, उनकी आशा धूमिल पड़ चुकी थी। गाँवों से रोजगार की तलाश में शहर जाने वाले मध्यवर्गीय युवाओं में शहरी एकाकीपन के कारण अजनबीपन तथा आंतरिक संत्रास की पीड़ा उत्पन्न हो रही थी। वहीं पढ़ी-लिखी व कामकाजी औरतें के कारण पारंपरिक स्त्री-पुरुष के रिश्तों में बदलाव हो रहे थे।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

इन्हीं सब परिस्थितियों को 'नई कहानी' आंदोलन ने कहानी का केन्द्र बनाया।

इस दौर में लिखी गयी प्रमुख कहानियाँ थी - राजेन्द्र यादव की 'टूटना', मोहन राकेश की 'एक और ज़िंदगी', 'उषा प्रियंवदा की मछलियाँ', कृष्णा सोबती की 'बादलों के घेरे' इत्यादि।

यदि शिल्प के स्तर पर बात करें, तो इन कहानियों में पारंपरिक शिल्पगत प्रतिमानों को तोड़कर नये प्रतिमान रचे गये।

इन कहानियों में कथानक सामाजिक या राजनीतिक से अधिक व्यक्तिगत जीवन से संबंधित था। इसलिये, भाषा, शैली, चरित्रों के स्तर पर

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

नवीन परिवर्तन देखे गये।

'नई-कहानी' के पात्र अच्छे या बुरे न होकर 'अच्छे और बुरे' का मिश्रण थे। जैसे 'मछलियाँ' कहानी की पात्र 'विजी' तथा 'नटराजन'।

भाषा के स्तर पर भाषा बहिर्जगत के बजाय अंतर्जगत से संबंधित थी। इस कारण चेतना प्रवाह शैली, प्रत्यावलोकन शैली व आंतरिक संवाद जैसी नई भाषागत शैलियाँ विकसित हुई।

कहानियों में मानसिक अंतर्द्वंदों को दिखाने के लिये प्रतीकों का महत्व बढ़ा। जैसे-

"मैं चिड़िया होना चाहती हूँ।

वस्तुतः इन कहानियों पर पाश्चात्य विचारधाराओं यथा- मनोविश्लेषण

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

- वाद (फ्रॉयड), अस्तित्ववाद (सार्त्र) इत्यादि का प्रभाव रहा जिसके कारण अवचेतन मन एवं मानसिक अंतर्द्वन्द्व के स्तर पर कहानी में इन नवीन शिल्पगत विशेषताओं का समावेश हुआ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) घनानंद के काव्य-शिल्प पर प्रकाश डालिए। 15

घनानंद रीतिकाल की रीतिमुक्त काव्य धारा के लोकप्रिय कवि थे।

रीतिमुक्त धारा के कवि यद्यपि रीतिसिद्ध कवियों की ही भाँति दरबार में रहकर कविता कर रहे थे, किंतु जहाँ रीतिसिद्ध कवि जैसे - बिहारी आदि श्रृंगार के 'देहमूलक प्रेम' का वर्णन कर रहे थे, वहीं घनानंद जैसे रीतिमुक्त कवि 'भावनात्मक प्रेम' को महत्व दे रहे थे।

यही प्रभाव घनानंद के काव्य-शिल्प पर भी दिखता है।

भाषा के स्तर पर बात करें, तो घनानंद की प्रसिद्धि ही भाषा के कुशल प्रयोग के कारण है। ब्रजभाषा के सुंदर प्रयोग के कारण उन्हें 'भाषा-प्रवीन' कहा गया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इनकी कविता में सहज शिल्प होते हुये भी संवेदना की गहराई दिखायी पड़ती है, जो पाठक को भी अपने दुःख में शामिल करने की सामर्थ्य रखती है।

अपनी प्रेमिका 'सुजान' के वियोग में लिखी 'वियोग-शृंगार' की एक ऐसी ही पंक्ति का उदाहरण द्रष्टव्य है -

'उजरनि बसी है हमारी अँखियन देखो'

उपरोक्त उदाहरण में संवेदना की गहराई के साथ ही, शिल्प के स्तर पर विरोधाभास अलंकार का प्रयोग द्रष्टव्य है।

भाषा के स्तर सुंदर शब्दों का प्रयोग, लालित्यपूर्ण प्रवाह एवं अलंकारों के सुंदर प्रयोग के कारण

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वे काव्य की संवेदना को पाठक के मन में जगाने में सफल हो पाते हैं। जैसे कृष्ण वियोग-भक्ति को एक उदाहरण में देखा जा सकता है-

"ऐरी रूप अगाधे राधे
राधे, राधे, राधे, राधे
तेरी मिति को ब्रजमोहन
बहुत जतन है साधे।"

स्पष्ट है कि शिल्प के स्तर पर घनानंद ने अपनी विशिष्ट शैली के कारण घनीभूत प्रभाव उत्पन्न करने में सफलता प्राप्त की।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) छायावादी कविता के बिंब-सौंदर्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

छायावादी काव्य 1936 के दौर में लिखा गया काव्य है।

इस धारा के प्रमुख कवि थे - सुमित्रानंदन पंत, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' तथा महादेवी वर्मा।

मैनेजर पांडेय के अनुसार छायावाद की प्रमुख विशेषताओं में प्रकृति का सौंदर्य वर्णन, रहस्यवाद, प्रेम की अनुभूति इत्यादि प्रमुख थी। इसलिये इन विशेषताओं के प्रक्षेपण के लिये छायावादी काव्य में बिंब के स्तर पर भी व्यापक प्रयोग देखने को मिले।

पाश्चात्य प्रभाव के कारण फ्लिंट के 'बिंब-दर्शन' को छायावादी कवियों ने

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रमुख तौर पर अपनाया, ताकि प्रकृति के सौंदर्य, आंतरिक भावनाओं तथा रहस्यवाद को उभारा जा सके।

जयशंकर प्रसाद के "कामायनी" में 'बिंब-सौंदर्य' कई जगह पर देखने को मिलता है-

"हिम गिरी के उत्तुंग शिखर पर
बैठ शिला की शीतल छाँह
एक पुरुष भीगे नयनों से
देख रहा था प्रलय प्रवाह"

(दृश्य - बिम्ब)

छायावादी कवियों ने अपनी गहन अनुभूतियों को पाठकों की आँखों के समक्ष उपस्थित करने के लिये 'लाक्षणिक-बिंब' तथा 'उपलक्षित-बिंब' दोनों का सहारा लिया। 'दृश्य बिंबों' के साथ

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

साथ श्रव्य बिंबों का सौंदर्य भी उनकी कविताओं में देखने को मिलता है -

"झर झर झर गिरि झर, निर्झर से।"

महादेवी वर्मा ने अपनी रहस्यानुभूति को भी बिंबों के माध्यम से ध्वनि का प्रभाव किया -

"तू स्वर बीन के तारों में
अपने से गा अपने को गा"

"मैं नीर भरी दुःख की बदरी"

स्पष्ट है कि छायावादी कविता की संवेदना को स्पष्ट करने में 'बिंब-सौंदर्य' ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) बिहारी रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि क्यों माने जाते हैं? सोदाहरण उत्तर दीजिये। 20

'बिहारी' रीतिकाल की रीतिसिद्ध काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि हैं।

'बिहारी' द्वारा रचित रचनाओं में उपस्थित 'समाहार-क्षमता', 'समास-क्षमता', 'बिम्ब-[illegible]' तथा चमत्कारिता के कारण कई समीक्षक उन्हें रीतिकाल का सर्वश्रेष्ठ कवि मानते हैं।

जॉर्ज ग्रियर्सन जैसे समीक्षक ने तो बिहारी के लिये कहा कि "पूरे यूरोप में बिहारी की बराबरी का कोई कवि नहीं है।"

वस्तुतः बिहारी की इस सर्वश्रेष्ठता एवं लोकप्रियता का कारण उनके द्वारा रचित एकमात्र रचना 'बिहारी सतसई' है। इस रचना की लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि बिहारी को ख्याति व एकमात्र रचना होने के बावजूद हिंदी के

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

'दरबारी परंपरा' की प्रतिनिधि रचना है।

बिहारी ने इस ग्रंथ में मुख्यतः 'मुक्तकों' की रचना की है चूंकि बिहारी रीतिकाल के दरबारी कवि थे, इसलिये दरबारी माहौल के अनुरूप कम शब्दों तथा समय में अधिक चमत्कार एवं उल्लास उत्पन्न करना उनकी आवश्यकता थी।
उन्होंने भी इस जिम्मेदारी का बखूबी निर्वहन किया तथा अपने मुक्तकों में अद्भुत समाहार-क्षमता तथा चमत्कारिता का प्रदर्शन किया। ऐसा ही एक उदाहरण द्रष्टव्य है -

"कहत, नटत, रीझत, खिजत, मिलत, खिलत, लजियात
भरे भौन में करत हैं नैननु हीं सो बात"

इस रचना में एक ही पद में बिहारी के दरबार में उपस्थित नायक-नायिका की आंगिक-चेष्टाओं का चमत्कार

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पूर्ण वर्णन किया है।

एक ऐसा ही सुंदर उदाहरण द्रष्टव्य है -

"बतरस लालच लाल की,
मुरली धरी लुकाय।"
सौंह करै, भौंहनु हँसै
दैन कहै, नटि जाय।"

उपरोक्त उदाहरण राधा-कृष्ण का आश्रय लेकर नायक-नायिका के मध्य मौन वार्तालाप का सुंदर वर्णन किया गया है।

यही कारण है कि श्रृंगार-वर्णन में रीतिकाल का कोई भी कवि उनके आस-पास भी नहीं दिखायी पड़ता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) पद्माकर के शृंगार-वर्णन पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पद्माकर, रीतिकाल की रीतिबद्ध धारा के कवि हैं। लक्षण ग्रंथ परंपरा के भीतर वे दरबारी माहौल के अनुरूप शृंगार-वर्णन को केन्द्र में रखकर ही कविता ही लिखते हैं।

पद्माकर शृंगार-वर्णन में पारंगत कवि है। कविता में आलंकारिकता, 'बिंब-दर्शन' तथा 'शाब्दिक प्रयोगों" के माध्यम से चमत्कार कैसे उत्पन्न किया जाता है, यह पद्माकर भली-भाँति जानते थे।

दरबारी माहौल के अनुरूप पद्माकर का एक ऐसा ही उदाहरण द्रष्टव्य है -

गुलगुली गुल में गलीचा है, गुनीजन है,
चिक है, चिरागन की माला है।
कहे पद्माकर ज्यों गजक गिजा है सजी
सेज है, सुराही है, सुरा है और प्याला है।"

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इस उदाहरन में अनुप्रास अलंकार की छटा के माध्यम से पद्माकर ने चमत्कारिक प्रभाव उत्पन्न किया है।

वस्तुतः पद्माकर का श्रृंगार-वर्णन संयोग पक्ष पर आधारित है, जिसमें दैहिक पक्षों के अतिरिक्त 'सुरा', 'सेज' इत्यादि पक्ष जुड़कर इसे 'विषयासक्ति' तक सीमित भी करते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) निर्मल वर्मा के यात्रा साहित्य के वैशिष्ट्य को रेखांकित कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी के यात्रा साहित्य में राहुल सांकृत्यायन तथा अज्ञेय के पश्चात निर्मल वर्मा का नाम अग्रगण्य है।

निर्मल वर्मा ने हिन्दी यात्रा साहित्य को अपने अनुभव आधारित यात्रा-वृतांतों के माध्यम से नई ऊँचाई दी है।

उन्होंने अपने यात्रा साहित्य में न केवल भौगोलिक वर्णनों को शामिल किया है, बल्कि यात्रा के दौरान होने वाले व्यक्तिगत अनुभवों के साथ ही विभिन्न स्थानों के सामाजिक-सांस्कृतिक पहलुओं पर भी यथेष्ट लेखन किया है।

अपने प्रसिद्ध यात्रा-वृतांत '<u>चीड़ों पर चाँदनी</u>' में उन्होंने अपने यात्रा-संस्मरणों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

का ऐसा ही अद्भुत तथा आकर्षक वर्णन प्रस्तुत किया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) जयशंकर प्रसाद और अज्ञेय की कहानी-कला की तुलना कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मोहन राकेश के नाटक 'आधे-अधूरे' के महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) रामवृक्ष बेनीपुरी के रेखाचित्र-लेखन पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

रफ कार्य के लिये स्थान

(Space for Rough Work)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

रफ कार्य के लिये स्थान

(Space for Rough Work)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation